विचार बिन्दु

संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है। –प्रेमचंद

ज्ञान, समझ व युक्ति

ज्ञान, समझ और युक्ति जीवन के सभी पहलुओं से जुड़े तीन महत्वपूर्णस्तम्भ हैं। ज्ञान वस्तुतः आंकड़ों से आंकड़ों, या आंकड़ों से सूचना या सूचना से सूचना के संयोग का ऐसा संग्रह है जिसका सन्देश स्पष्ट होता है। ज्ञान के कम से कम तीन प्रकार हैं: शोध आधारित-ज्ञान, अनुभवजन्य-ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान। कार्य-संपादन में इन तीनों का महत्वपूर्ण योगदान है। अच्छा नेतृत्व नवीन ज्ञान को जीवन भर सीखता रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैं: थ्योरी, ऑब्जरवेशन, एक्सपेरिमेंट और मॉडलिंग। यहाँ युक्ति, जिसकी बात हम आगे करेंगे, को मॉडलिंग के समकक्ष माना जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथमेटिकल-मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है।

ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है। नवाचार और रचनात्मकता में ज्ञान एक महत्वपूर्ण कारक है।प्रभावी संचार के लिए ज्ञान भी आवश्यक है। जिन लोगों को किसी विषय की गहरी समझ होती है, वे आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं, अपने विचार साझा कर सकते हैं, और समस्याओं के हल करा सकते हैं। पर ज्ञान से आगे की यात्रा और भी महत्वपूर्ण है।

किसी कार्य को सम्पादित करते समय ज्ञान का उपयोग करने से अनुभव प्राप्त होता है। जीवन के विविध क्षेत्रों में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त होते रहते हैं, जिससे ज्ञान से आगे हमारी समझ या विजडम बढ़ती रहती है। विजडम को भारतीय दर्शन में बुद्धिमत्ता, मनीषा, मतिमानता, प्रज्ञा, प्रज्ञता, बुद्धिमानी, ज्ञान, ज्ञान-परिपूर्णता, ज्ञानज्ञता-कर्मज्ञता, समझ आदि कहा जाता है। प्राचीन दृष्टिकोण के साथ ही पिछले पाँच दशकों के दौरान साइंस ऑफ़ विजडम पर अनुसंधान में भी भारी बढ़ोत्तरी हुई है। विजडम को परिभाषित करने के अनेक प्रयत्न हुये हैं किन्तु अभी तक सर्वमान्य परिभाषा का निर्धारण नहीं हो पाया है। विजडम व्यक्तित्व की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषता मात्र नहीं है बल्कि यह एक न्यूरो बायोलॉजिकल विशेषता है जो समाजोन्मुखी व्यवहार, भावनात्मक-नियमन और आध्यात्मिकता जैसे विशिष्ट घटकों से मिलकर बनती है। इस बात को आगे और भी स्पष्ट करेंगे।

हाल ही में लोगों में विजडम के घटकों को बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन मेटा-एनालिसिस द्वारा किया गया। इस अध्ययन में ऐसे क्लिनिकल ट्रायल्स को समाविष्ट किया गया जो विजडम बढ़ाने के लिये अभी तक क्रियान्वित किये गये थे। इसमें 7096 व्यक्तियों से जुड़े 57 अध्ययनों के आंकड़े समाहित किये गये थे। विजडम के सभी घटकों से संबंधित आंकड़े तो नहीं मिल पाये किन्तु समाजोन्मुखी-व्यवहार (प्रोसोशलबेहवियर) से संबंधित 29, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरेगुलेशन) से संबंधित 13 और आध्यात्मिकता (स्पिरिचुअलिटी) से संबंधित 15 अध्ययन शामिल किये गये थे। मेटा-एनालिसिस के परिणाम बताते हैं कि आध्यात्मिकता, भावनात्मक-नियमन और समाजोन्मुखी व्यवहार को बढ़ाने के लिये किये गये हस्तक्षेप व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं (देखें, ई.ई. ली इत्यादि, जामा साइकेट्री, 77(9):925-935, 2020)।

शोधकर्ताओं को मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित करने हेतु विजडम बढ़ाने के उपायों पर ऐसे अध्ययन नहीं मिले जो विजडम के सभी घटकों की समग्रता को एकीकृत रूप से समाहित करते हुये किये गये हों। इस मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित समीक्षा के अनुसार विजडम को मापने के लिये कई दृष्टिकोण उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये विजडम को दो रूपों में देखा जा सकता है—पहला उपयोगी अंतर सैद्धांतिक बुद्धिमत्ता (थ्योरेटिकल विजडम या जीवन के यथार्थ की समझ; प्रकृति और मानव के रिश्तों की समझ आदि) और दूसरी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (प्रैक्टिकल विजडम / फ्रोनेसिस, सही कारणों के लिये, सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता) सम्मिलित है। इन दोनों प्रकारों में सम्मिलित घटकों को मापने की विधियां और क्षमता वैज्ञानिक विकसित कर चुके हैं। परन्तु सैद्धांतिक ज्ञान (गहन समझ) की तुलना में व्यावहारिक ज्ञान (व्यावहारिक समझ) को प्रश्नावली के माध्यम से अधिक सुगमता से मापा जा सकता है। इस मेटा-एनालिसिस में व्यावहारिक समझ के सम्बन्ध में समाजोन्मुखी व्यवहार और भावनात्मक विनियमन को लिया गया और सैद्धांतिक समझ के संबंध में आध्यात्मिकता को शामिल किया गया। बुद्धिमत्ता के अन्य घटकों से जुड़े इंटरवेंशन वाले अध्ययनों की कमी के कारण निर्णय लेने की क्षमता, अनिश्चितता से निपटने की क्षमता, और सहिष्णुता जैसे घटक अध्ययन में शामिल नहीं किये जा सके। फिर भी जिन तीन घटकों को शामिल कर यह अध्ययन किया गया वह नया रास्ता दिखाने वाला है क्योंकि अध्ययन में सम्मिलित तीनों घटक अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। विजडम जैसे विषय यदि एम्पिरिकल रिसर्च की सीमाओं से परे ना भी हों तो भी काफी चुनौतीपूर्ण हैं।

प्रज्ञा के संबंध में यह बताना भी उपयोगी है कि आध्यामिकता इसका एक महत्वपूर्ण घटक है (देखें, डी.वी. जेस्ते इत्यादि, जर्नल ऑफ़ साइकियाट्रिक रिसर्च, 132:174-181, 2021)। आध्यामिकता और धार्मिकता में अंतर समझना जरूरी है। आध्यात्म हमें प्रकृति के समीप ले जाता है। आध्यामिकता व्यक्ति को व्यक्ति के समीप ले जाती है। आध्यामिकता प्राकृतिक तंत्रों के समीप भी ले जाती है। आध्यात्म वस्तुतः आत्मावलोकन और आत्म-समीक्षा के अवसर प्रदान करता है। आत्म-समीक्षा में यह भी शामिल है कि प्रकृति के साथ हमारे क्या संबंध हैं और हमें प्रकृति को बेहतर करने में हमारा क्या योगदान है। धार्मिकता एक अलग विषय है। धर्म की त्रुटिपूर्ण किन्तु बड़ी लोकप्रिय व्याख्या लोगों के बीच में मिलती है। ध्यान दीजिये, आध्यामिकता में किसी एक धर्म के प्रति निष्ठा महत्वपूर्ण नहीं है। आध्यात्मिकता जहां एक और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के जैसा मानने का विचार देती है वहीं दूसरी ओर धर्म की समकालीन स्थिति यह है कि सारा विश्व अलग-अलग जाति धर्म और संप्रदाय में बंट गया है। आत्मवत्सर्वभूतेषु का सिद्धांत आध्यात्म की मूल आत्मा है। दरअसल एक रिलीजियस व्यक्ति आध्यात्मिक भी हो सकता है, लेकिन एक आध्यात्मिक व्यक्ति धर्म के लोकप्रिय स्वरुप के अनुसार धार्मिक भी हो ऐसा आवश्यक नहीं है। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि भारतीय दर्शन में धर्म शब्द का मूल अर्थ उस शब्द से नहीं है जिसे दुनिया रिलीजन कहती है। असल में धर्म का मूल अर्थ व्यक्ति के नियत कर्तव्यों और उनके पालन से है।

> **सिद्धान्त के अनुसार एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है।**

प्राचीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक साहित्य में भी समझके वैज्ञानिक स्वरूप देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिये वैज्ञानिकों द्वारा गीता का अध्ययन कर उसमें विजडम, प्रज्ञा, ज्ञान आदि पर 10 घटक खोजे गये हैं। इनमें से जीवन का ज्ञान, भावनात्मक विनियमन (इमोशनल रेगुलेशन) या आत्म-नियंत्रण, इच्छाओं पर नियंत्रण, मध्यम-मार्ग (मॉडरेशन या टेम्पेरेंस) निर्णायकता, आत्मा और उसके विषय में ज्ञान, ईश्वर पर विश्वास, कर्म-योग, आत्म-संतोष, प्राणियों के प्रति दया, दान, योग इत्यादि ऐसे विषय हैं जो केवल दर्शन या धर्म के विषय नहीं हैं बल्कि क्लिनिकल ट्रायल्स में भी उपयोगी पाये गये हैं। वर्तमान और अद्यतन शोध की स्थिति यह है कि विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा के कम से कम सात घटक पहचाने जा चुके हैं। इनमें (1) सहिष्णुता एवं वैचारिक विविधता को स्वीकार करना, (2) अनिश्चितता के रहते हुये भी निर्णय लेने की क्षमता, (3) भावनात्मक विनियमन या इमोशनल रेगुलेशन, (4) समाजोन्मुखी व्यवहारया प्रोसोशल बिहेवियर जिसमें आत्म-नियंत्रण, दया, सहायता और करुणा आदि शामिल हैं, (5) आत्म-समीक्षा, (6) उचित सलाह देने में तत्परता या सोशल एडवाइजिंग तथा (7) आध्यात्मिकता शामिल हैं। जिस व्यक्ति में यह सभी सातों क्षमतायें (प्रज्ञा के घटक) पाये जाते हैं वह उन परिस्थितियों से बड़ी आसानी से बाहर निकल जाता है जिनमें प्रज्ञा में कमी वाले व्यक्ति उलझ जाते हैं।

वस्तुतः प्रज्ञा का मूल उद्देश्य स्वयं की और समाज की जिंदगी में बेहतरी लाना है। यहां एक प्रश्न उठता है कि यह विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा तो दुधारी तलवार हो सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जिसमें तिकड़मी बुद्धिमत्ता या एविल-विजडम हो। दरअसल ऐसा नहीं होता। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रज्ञा व्यक्ति को सदैव आत्म-नियंत्रित, आत्म-समीक्षक, और समाजोपयोगी ही बनाती है। प्रज्ञावान व्यक्ति अपने जीवन को सदैव बेहतर बनाता है और एक ऐसी आयु प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में सुखायु कहा जाता है। सुखायु के साथ-साथ प्रज्ञावान व्यक्ति एक ऐसी आयु भी प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में हितायु कहा जाता है। सुखायु और हितायु प्रज्ञावान व्यक्ति के लिये ही संभव है। शातिर दिमाग, तिकड़मी या चलता-पुर्जा व्यक्ति प्रज्ञावान नहीं होता। तिकड़म के लिये उसके पास जानकारी बहुत हो सकती है परंतु प्रज्ञाविहीन कोरी जानकारी सुखायु और हितायु नहीं प्रदान कर सकती।

अब हम ज्ञान और समझ से आगे चलकर युक्ति की बात करते हैं जो ज्ञान और समझ से भी आगे समस्याओं के हल का रास्ता है। यह लोगों को लीक से हटकर सोचने और समस्याओं के समाधान हेतु विविध विकल्प देते हुए श्रेष्ठ विकल्प चुनने में मदद करती है। युक्ति एक सार्वभौमिक प्रबंधकीय सिद्धांत है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक, जो युक्ति-व्यपाश्रय सिद्धांत के जनक माने जाते हैं, के अनुसार अनेक कारणों की समग्रता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वर्तमान, भूत और भविष्य, तीनों कालों को जाना जा सकता है। युक्ति के द्वारा धन-संपत्ति, धर्म और कत्तर्व्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सू.11.25): बुद्धिःपश्यति या भावान्बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेयात्रिवर्गःसाध्यतेयया।। ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति के लक्षण और व्यापक सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुतः जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समग्र अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है। एक उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिक महत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। सामान्य-विशेष सिद्धान्त के अनुसार एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढ़त होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर ह्रास या घटत होती है। यह विज्ञात अर्थ है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है।

दैनिक जीवन में समस्या-समाधान हेतु ज्ञान, समझ और युक्ति एक साथ और उत्तरोत्तर श्रेणीबद्ध रूप दोनों प्रकार से उपयोगी हैं। ज्ञान जानकारी और तथ्य प्रदान करता है जो हमें समस्या को समझने और संभावित समाधानों पर मंथन करने में मदद कर सकता है। समझ हमें पिछले अनुभव और स्थिति के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने में मदद करती है। युक्ति हमें आगा-पीछा देखकर एक जटिल समस्या को छोटे, आसानी से प्रबंधन-योग्यचरणों में तोड़ने में मदद करती है, जिसे समस्या को कुशलतापूर्वक हल करने के लिए लागू किया जा सकता है। इन तीन बहुआयामी संसाधनों के बिना जीवन में हर क्षण आने वाली जटिल समस्याओं का प्रभावी समाधान निकालना लगभग असंभव हो जाता है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंगप्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

करोना काल के लॉकडाउन के वो 68 दिन

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

करोना के जनता कर्फ्यू और लॉकडाउन को चार साल पूरे हो रहे हैं पर 24 मार्च को लॉकडाउन का दिन याद करके आज भी सिहरन उठ जाती है। 22 मार्च को 14 घंटे का जनता कर्फ्यू और 22 मार्च को ही सायंकाल ताली, थाली, घंटी बजाने के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान को भरपूर समर्थन मिला पर लोग उस समय तक कोरोना की भयावहता को लेकर इतने गंभीर नहीं दिखे। लोगों ने ताली थाली के आह्वान का मखौल भी उड़ाया और शुरुआती दौर में हालात की भयावहता को समझ नहीं पाये। इसे पोंगा पंथी और ना जाने क्या क्या कहा जाने लगा। लगभग यही हाल आरंभ में कोरोना वैक्सिन को लेकर रहे पर फिर लोगों को सब कुछ समझ में आया कि ताली थाली भी जरुरी थी तो लॉक डाउन और वैक्सिनेसन भी उतना ही जरुरी। ज्योंही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों से मुखातिब होते हुए 25 मार्च से 14 अप्रेल तक के देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की तो एक बार तो सब सकते में ही आ गये ।पर जिस तरह से लॉकडाउन के बावजूद कोरोना के मामलें दिन दूने रात चौगुने होने लगे और कोरोना पीड़ित अपनों से ही दूर होते गए तब इसकी भयावहता को समझा जाने लगा। सरकार ने बार बार सेनेटाइजर के उपयोग, मास्क के लगातार उपयोग और दूरी का संदेश दिया उसका असर आज समझ में आने लगा है। सरकार एसओपी जारी कर हालात को काबू में करने में जुट गई। चिकित्सकों, चिकित्साकर्मियों, पेरा मेडिकल स्टॉफ ने जान की वाजी लगा कर सेवा में जुट गए। हालात यहां तक देखे गए कि सेवा में लगे लोग में मौत का ग्रास बनने लगे। दूसरी लहर आते आते तो हालात यहां तक बदतर हो गए कि अस्पतालों में जीवन रक्षक वेंटिलेटर और ऑक्सीजन की उपलब्धता की दिक्कत आ गई। यह सब तो एक और वहीं दूर-दराज में रहने वाले लोग जो भी साधन मिला यहां तक कि पैदल ही परिवार के साथ काम धंधा छोड़कर अपने गांव की और रुख करने लगे और हजारों किलोमीटर पैदल ही निकल पड़े।

सरकार के सामने इन लोगों के लिए यात्रा के दौरान खाने पीने ठहरने और नियत स्थान तक पहुंचाने की समस्या हो गई वह अलग। इसी तरह से विदेशों में अध्ययन कर रहे या रह रहे लोगों को सुरक्षित लाना भी सरकार के सामने किसी चुनौती से कम नहीं था। अखबारों में आक्सीजन की कमी, वेंटिलेटर के अभाव में अस्पताल परिसर या सड़क पर ही दम तोड़ते लोगों, अंतिम क्रिया तक में शामिल नहीं होने तक का दुख जैसे कई अनुभव इस दौरान देखने को मिले। बीस-पचास आदमियों में शादी की कल्पना को भी इसी दौरान साकार होते देखा गया। शुरुआती दौर मे तो कोरोना वैक्सिन की बात करना ही दूर की बात थी तो बाद में वैक्सिन के पहले दौर के दौरान जिस तरह से वैक्सिन को भी राजनीति की भेंट चढ़ाने के प्रयास हमने देखे हैं। खैर यह दूसरी बात है कि देशवासियों को निःशुल्क कोरोना वैक्सिनेशन की दो डोज और दुनिया के देशों को वैक्सिन उपलब्ध कराने की हमारी पहल को सारी दुनिया ने सराहा।

कोरोना के कारण देश दुनिया में सब कुछ थम जाने का दौर आज तो ना भूतो ना भविष्यती जैसा लग रहा है पर जिन्होंने कोरोना की भयावहता से गुजरने वालों के लिए आज भी यह किसी इतिहास की अब तक की किसी त्रासद घटना से कम नहीं है। जब रक्त बीज की बात की जाती है तो कपोल कल्पना से कम नहीं लगती पर जिन्होंने कोरोना का नजदीक से देखा और भुगता है वह जानते हैं कि राक्षस रक्त बीज से कम नहीं था कोरोना वायरस। रक्त बीज में भी तो यही है कि उसके रक्त की बूंद जहां भी गिरेगी वहीं नया राक्षस पैदा हो जाएगा। लगभग यही कुछ देखा है देश दुनिया के लोगों ने कोरोना काल में। गरीब हो या अमीर, साधन संपन्न हो या साधन विहीन, झोपड़ी वासी हो या महल में निवास करने वाला, लगभग सभी कोरोना के उस दौर में घर की चार दीवारी में बंद हो कर रह गए।

कोविड 19 से दुनिया में सब कुछ थमा कर रख दिया। हालात ही ऐसे थे। संपर्क ही जान लेवा बन रहा था। सेनेटाइजर, मास्क, डिस्टेंस, चार दीवारी, क्वरंटाइन और बस यही कुछ देखेन को सुनने को मिलता था तो अस्पतालों में कोरोना के कारण होने वाली क्या अपने क्या पराये की मौत। हालात लगभग सारी दुनिया में ऐसे ही रहे। 2019 में चीन से सारी दुनिया को अपने आगोश में लेने वाले कोरोना का हमारे देश में चीन के बुहान से केरल के रास्ते 30 जनवरी, 20 को प्रवेश हुआ और 24 मार्च 2020 जिस दिन से लॉक डाउन की शुरुआत हुई उस दिन तक कोरोना पोजेटिव के 519 मामलें सामने आ चुके थे और 19 लोग कोरोना के कारण अपनी जान गंवा चुके थे।

खैर यह तो तस्वीर का एक पहलू रहा। दरअसल मुद्दे की बात यह है कि आज भले ही हम लॉक डाउन की चार साल की बात कर रहे हैं पर 68 दिन का यह लॉक डाउन ही कोरोना में सही मायने में जीवनदायी सिद्ध हो सका। 25 मार्च से 14 अप्रेल, फिर 15 अप्रेल से 3 मई, उसके बाद 4 मई से 17 मई और फिर 18 मई, 20 से 31 मई, 20 तक के 68 दिन घर की चार दीवारी में बंद रहकर गुजारने का अलग ही अनुभव रहा है। वर्क फ्राम होम से लेकर ऑन लाईन स्टडी तक का यह दौर रहा और आज भी भले ही कम हो गया हो पर ऑन लाईन स्टडी व वर्क फ्राम होम कमोबेस चल रहा है। हांलाकि कोरोना काल को भी लोगों ने भुनाने में कोई कमी नहीं छोड़ी, वेंटिलेटर बेड और आक्सीजन सिलेण्डर, कंसरट्रेटर, ऑक्सीजन बेड और दवाओं की कालाबाजारी भी खूब देखने को मिली। खैर मानवता के दुश्मन तो हर युग में रहते आये हैं।

ऐसा नहीं है कि लॉकडाउन का दौर हमने ही देखा हो अपितु दुनिया के अधिकांश देशों में लॉकडाउन रहा और लॉकडाउन के माध्यम से ही कोरोना के फैलाव को रोकने के प्रयास सफल हो सके। भूलना नहीं चाहिए कि इंग्लेण्ड के तत्कालीन प्रधानमंत्री को करोना प्रोटोकाल की पालना में कोताही के कारण ही भले ही उन्होंने लाख सफाई दी, अपनी प्रधान मंत्री की कुर्सी से हाथ धोना पड़ा। कोरोना प्रभावित की सूचना पर जिस तरह से उस घर से प्रभावित को अस्पताल ले जाते थे व घर के बाहर नोटिस चस्पा करने और अलग थलग होने के हालात कितने त्रासद होते थे यह कल्पना का विषय ही है। मामूली बुखार व संभावना पर ही घर में ही अलग थलग क्वारंटाइन होने को भुगतने वाले ही जानते हैं।दिन रात मौत का भय उस व्यक्ति या परिवार से पूछा जाए जो इन हालातों से गुजरे हैं।

एक बात साफ हो जानी चाहिए कि कोरोना के कारण 30 जनवरी, 2020 से 5 मार्च, 24 तक भारत में ही 3 करोड़ 37 लाख 66 हजार 707 मामलें सामने आ चुके हैं और 4 लाख 48 हजार 339 अपनों को खो चुके हैं। यह कोई छोटा मोटा आंकड़ा नहीं है। इसके अलावा सरकार के जनता कर्फ्यू व उसके बाद 68 दिन के लॉक डाउन नहीं होता तो कोरोना से प्रभावित होने वाले और इसके कारण होने वाली मौतों की संख्या अकल्पनीय होती। सरकार की सख्ती, लोगों की अवेयरनेस के बावजूद भी जो कोरोना काल के हालात देखें उसको याद करके ही सिहरन होने लगती है। ऐसे में यह कहने में दो राय नहीं होनी चाहिए कि कोरोना रुपी रक्त बीज का असर कम करने में अन्य के साथ ही लॉक डाउन की प्रमुख भूमिका रही है। आने वाली पीढ़ियों को भले ही यह अतिशयोक्तिपूर्ण लगे पर जिन्होंने देखा, भोगा और अपनों को खोया है वे कोरोना को भूल ही नहीं सकते। ताली-थाली की भले ही मजाक में लिया जाए पर यह और लॉक डाउन ने जिंदगियां बचाने में बड़ी भूमिका निभाई है। देश दुनिया में इस तरह की महामारी की पुनरावृति कभी भी नहीं होनी चाहिए।

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

मसीह समाज का दीपावली समकक्ष पर्व "ईस्टर"

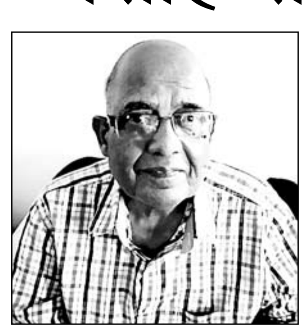

डॉ. जे. के. गर्ग

ईस्टर से पहले आने वाले सप्ताह को ईसाई पवित्र सप्ताह मानते है। ईस्टर मे, अंडे का बहुत महत्व है क्योंकि, जिस प्रकार चिड़िया सबसे पहले, अपने घोसले मे अंडा देती है। उसके बाद उसमे से, चूजा निकलता है उसी प्रकार, यहा अंडे को एक शुभ स्मारक माना जाता है क्योंकि अंडा अपनी जड़ता को तोड़ करके एक नये प्राणी को जन्म देता है। वास्तव के अंदर ईस्टर का संदेश है कि जो जड़ता को तोड़े, वही –है असली जीवन होता है। ईस्टर पर लोग अण्डों पर विभिन्न रंगो में कलाकृति एवँ चित्रकारी करके अपने स्वजनों मित्रों को उपहार के रूप में भेट करते है। ईसाई लोग चर्च गिरजा घर जाकर प्रार्थना करके मोम बत्तियां जलाते है। ईस्टर की दिन अपनी दुश्मनी को मिटा कर एक-दूसरों से गले मिलते हैं। ईसाईयों का मानना है कि जिस प्रकार अंडें में से नया जीव जन्म लेता है, उसी तरह ईस्टर के दिन वे परस्पर ईष्ट मित्रों और परिजनों को नये सुखमय स्वस्थ जीवन को जीने की शुभ कामनाएं देते हैं। कहीं पर अण्डों पर चित्रकारी करके, कही दूसरे रूप मे सजा कर, उपहार के रूप मे परस्पर एक-दूसरे को दिया जाता है। सभी एक-दूसरे को गिफ्ट्स, फ्लावर्स, कार्ड, चोकलेट, केक देकर परस्पर शुभकामनाएं एवं बधाईयाँ देते हैं। सुबह से शाम तक पार्टी चलती है ईस्टर मे जिसमे, पारंपरिक लोकप्रिय लंच-डिनर होता है। निःसंदेह मसीह समाज जे लिये ईस्टर का वो ही महत्व जो हिन्दुओं के लिये दीपावली का होता है। दीपावली के दिन प्रभु राम का 14 साल के वनवास के बाद अपने घर अयोध्या में प्रवेश हुआ था। इसी तरह शूली पर लटकाए जाने के तीन दिन बाद प्रभु यीशु मसीह ईस्टर पर पुन अवतरित हुए थे। भारत में मुख्य रूप से मुंबई, गोवा और पूरे भारत मे जहां भी अधिकतर क्रिश्चियन लोग निवास करते है वहां पर चर्च को विशेष रूप से, सजाया जाता है। कनाड़ा में विश्व की सबसे बड़ी ईस्टर एग्ग की साइट है। पश्चिमी ईसाई धर्म के लोग ईस्टर सीज़न के दौरान ऐश वेड्नस्डे को उपवास रखना शुरू करते हैं और ईस्टर संडे को अपने उपवास का अंत करते हैं।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोग परस्पर स्नेहपूर्ण तरीके से रहते हुए अपनी मान्यताओं का पालन करते वहीं पर दूसरे धर्मों की मान्यताओं का भी सम्मान करते है। हमारा भारत विभिन्न धर्मों, संस्कृति और भाषाओं का अद्भुत राष्ट्र है। भारत के संविधान मे सभी धर्मों के अनुयायियों को समान अधिकार प्राप्त है। हर जाति और धर्म के लोग अपने, त्यौहार अपने अपने तरीके से मनाते है। गुड फ्राइडे व ईस्टर क्रिश्चियन धर्म को मानने वालों के लिए बहुत महत्वपूर्ण त्यौहार है। ईसाई धर्म की मान्यताओं के मुताबिक गुड फ्राइडे के दिन ही प्रभु यीशु मसीह के सूली पर टाकने और दफन होने की दुखद घटना घटित हुई थी। अतः गुड फ्राइडे एक शोक का दिन है। कहा जाता है कि प्रभु यीशु ने बहुत कठिन उपवास किये, त्याग व आत्म बलिदान दिया और मानव मात्र को प्रेम स्नेह एवँ भाईचारे का पाठ पढाया था। यीशु को मानवता की खातिर क्रूस पर चढ़ाया गया था। मसीह समाज का दीपावली समकक्ष पर्व ईस्टर ईसाई धर्म को मानने वालों की मान्यता है कि गुड फ्राइडे के दिन प्रभु यीशु मसीह को सूली पर लटका दिया गया था किंतु यीशु मसीह मात्र तीन दिन बाद पुनर्जीवित हो गये थे। इसी दिन को ईसाई समुदाय दुनिया भर में ईस्टर दिवस के रूप में मनाते हैं।

ईस्टर साधारणतया संडे यानी रविवार के दिन ही मनाया जाता है। इस वर्ष ईस्टर 31 मार्च 2024 रविवार को मनाया जाएगा। ईसाई धर्म को मानने वालों के लिये ईस्टर अत्याधिक महत्त्वपूर्ण और पवित्र दिन होता है क्योंकि इसी दिन यीशु मसीह पुनर्जीवित होने के साथ जीवन की आशा एवँ प्रभु ईसा मसीह के प्रति विश्वास का प्रतीक है। ईस्टर का पर्व साल के किसी निश्चित दिन को नहीं मनाया जाता बल्कि इसकी तारीख हर साल साधारणतया बदलती रहती है। ईस्टर को 40 दिनों तक मनाया जाता है। क्योंकि मान्यता मुताबिक प्रभु यीशु मसीह इस पावन धरती पर लगभग चालीस दिनों तक रहे और उन्होंने अपने अनुयायियों को प्रेम-सद्‌भाव का पाठ पढाया। इस दौरान सभी ईसाई उपवास, प्रार्थना करते हैं और अपनी गलतियों के लिये प्रायश्चित करते हैं। ईस्टर से पहले आने वाले सप्ताह को ईसाई पवित्र सप्ताह मानते है। ईस्टर में अंडे का बहुत महत्व है क्योंकि, जिस प्रकार चिड़िया सबसे पहले, अपने घोसले में अंडा देती है। उसके बाद उसमे से चूजा निकलता है उसी प्रकार, यहा अंडे को एक शुभ स्मारक माना जाता है क्योंकि अंडा अपनी जड़ता को तोड़ करके एक नये प्राणी को जन्म देता है। वास्तव के अंदर ईस्टर का संदेश है कि जो जड़ता को तोड़े, वही असली जीवन होता है। ईस्टर पर लोग अण्डों पर विभिन्न रंगो में कलाकृति एवँ चित्रकारी करके अपने स्वजनों मित्रों को उपहार के रूप में भेट करते है। ईसाई लोग चर्च गिरजा घर जाकर प्रार्थना करके मोमबत्तियां जलाते है। ईस्टर के दिन अपनी दुश्मनी को मिटा कर एक-दूसरों से गले मिलते हैं।

ईसाईयों का मानना है कि जिस प्रकार अंडें में से नया जीव जन्म लेता उसी तर ईस्टर के दिन वे परस्पर ईष्ट मित्रों और परिजनों को नये सुखमय स्वस्थ जीवन को जीने की शुभ कामनाएं देते हैं। कहीं पर अण्डों पर चित्रकारी करके, कही दूसरे रूप मे सजा कर, उपहार के रूप मे परस्पर एक-दूसरे को दिया जाता है। सभी एक-दूसरे को गिफ्ट्स, फ्लावर्स, कार्ड, चोकलेट, केक देकर परस्पर शुभकामनाएं एवं बधाईयाँ देते हैं। सुबह से शाम तक पार्टी चलती है ईस्टर मे जिसमें, पारंपरिक लोकप्रिय लंच-डिनर होता है। निःसंदेह मसीह समाज जे लिये ईस्टर का वो ही महत्व जो हिन्दुओं के लिये दीपावली का होता है। दीपावली के दिन प्रभु राम का 14 साल के वनवास के बाद अपने घर अयोध्या में प्रवेश हुआ था। इसी तरह शूली पर लटकाए जाने के तीन दिन बाद प्रभु यीशु मसीह ईस्टर पर पुन अवतरित हुए थे। भारत मे मुख्य रूप से मुंबई, गोवा और पूरे भारत मे जहा भी अधिकतर क्रिश्चियन लोग निवास करते है वहां पर चर्च को विशेष रूप से, सजाया जाता है। कनाड़ा में विश्व की सबसे बड़ी ईस्टर एग्ग की साइट है। पश्चिमी ईसाई धर्म के लोग ईस्टर सीज़न के दौरान ऐश वेड्नस्डे को उपवास रखना शुरू करते हैं और ईस्टर संडे को अपने उपवास का अंत करते हैं। भारत मे ही नही बल्कि, संपूर्ण विश्व मे जहा गुड फ्राइडे को शांति से बनाते है वही ईस्टर को हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ मनाते हैं। संसार के सभी देशों में 31 मार्च 2024 रविवार को मनाएंगे।

डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक जयपुर

अंतर्राष्ट्रीय नाका पॉइंट पर पहुंची पंजाब-राजस्थान पुलिस

बीकानेर, (निसं)। प्रदेश में भयमुक्त एवं निष्पक्ष चुनाव कराने, ड्रग्स एवं हवाला कारोबार पर अंकुश लगाने के लिए मंगलवार को इंटर स्टेट कॉर्डिनेशन कमेटी की श्रीगंगानगर में बैठक हुई। इसमें लोकसभा चुनाव के मद्देनजर मादक पदार्थ की तस्करी, हवाला कारोबार एवं बदमाशों व दोनों राज्यों के वांछितों की धरपकड़ की रणनीति पर मंथन किया गया।

राजस्थान व पंजाब पुलिस प्रशासन आपसी तालमेल के साथ वांछितों की धरपकड़ करेंगे। इसके लिए वे संयुक्त रूप से बदमाशों के ठिकानों पर दबिश देंगे। मीटिंग के बाद पुलिस अधिकारियों ने साधुवाली चेक पोस्ट पहुंचकर पंजाब-राजस्थान सीमा के पास अंतरराष्ट्रीय नाका पॉइंट को चेक किया। बैठक में पंजाब एवं राजस्थान पुलिस के अधिकारियों ने बदमाशों व वांछितों की सूची आदान-प्रदान की। बीकानेर रेंज आईजी ओमप्रकाश ने पंजाब पुलिस अधिकारियों को 960 वांछित व बदमाशों की सूची दी। वहीं पंजाब पुलिस ने 400 बदमाशों व वांछितों की सूची राजस्थान पुलिस अधिकारियों को सौंपी।

चुनावों के मद्देनजर पंजाब की सीमा पर रेंज के चारों जिलों में 39 चेकिंग नाके लगाए जाएंगे। बदमाशों पर निगरानी के लिए पड़ोसी राज्यों से सटे राजमार्गों पर स्थित होटल, ढाबों व धार्मिक स्थलों पर सीसीटीवी कैमरे लगवाए गए हैं। पंजाब में कोठा पुल, पतरेवाला, शिवपुर हेड सरवर खुईया, 500 एलएनपी पुल सरवर खुईया, पंजाबा पुल, भागसर पुल, साधुवाली चेक पोस्ट, दलियावाली पुल, चमारखेड़ा पुल, हाकमाबाद पुल, पतली चेक पोस्ट, मालापुरा चेक पोस्ट, हरिपुरा-खांदुखेड़ा सहित श्रीगंगानगर में 10 और हुनमानगढ़ जिले में दो जगह चेक पोस्ट लगाए जाएंगे। बैठक में गैंगस्टर-अपराधी गठजोड़ के उभरते रुझान, मादक पदार्थों की तस्करी जैसे संवेदनशील मुद्दे, सोशल मीडिया निगरानी की सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना, पुलिस गतिविधियों में ड्रोन के उपयोग के क्षेत्र में क्षमता निर्माण, जेल में बंद हार्डकोर/अपराधी आदि पर भी चर्चा की गई।

बैठक में अंतरराज्यीय सुरक्षा व्यवस्था, अपराध, संगठित अपराध, साइबर अपराध, ड्रग्स तस्करी, मानव तस्करी आदि जैसे गंभीर मुद्दों पर काम करने के साथ-साथ पुलिस के बीच समन्वय बनाए रखने पर भी जोर दिया गया।

राशिफल गुरूवार 28 मार्च, 2024

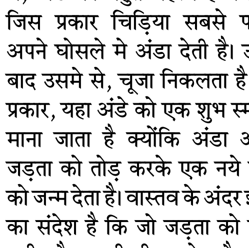

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, स्वाती नक्षत्र सांय 6:38 तक, हर्षण योग रात्रि 11:12 तक, विष्टि करण सांय 6:57 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मीन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा सांय 6:57 तक रहेगी। आज चतुरथी व्रत कल्पादि है। आज चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 9:31 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:57 तक, चर 11:01 से 12:32 तक, लाभ-अमृत 12:32 से 3:35 तक, शुभ 5:07 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:26, सूर्यास्त 6:38

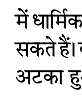

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

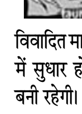

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

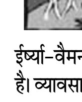

मिथुन
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

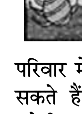

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

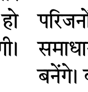

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

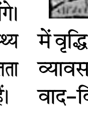

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। घर-परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

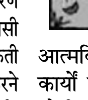

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

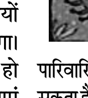

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

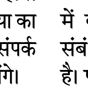

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

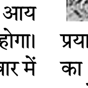

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

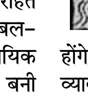

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

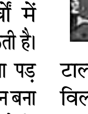

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।